बाइबल की एक कहानी



आशा | उद्देश्य | जीवन

बचाव



यीशु आँधी को शान्त करता है

जब सब कुछ नियंत्रण से बाहर लगता है तब भी यीशु पर भरोसा करने की कहानी।



साँझ के समय

उस दिन झील के किनारे बहुत से लोगों को सिखाने के बाद यीशु ने अपने चेलों से कहा, ‘आओ, हम पार चलें।’



वे नाव में चढ़े

चेलों ने भीड़ को छोड़ दिया और यीशु को नाव में ले चले। कुछ छोटी नावें भी उनके साथ चल रही थीं।



यीशु को विश्राम चाहिए था

इतने लम्बे दिन के बाद यीशु नाव के पीछे लेट गया।
उसने सिर रखा और सो गया।



हवा चलने लगी

जब वे नाव चला रहे थे, आकाश अँधेरा हो गया और बहुत तेज हवा चलने लगी। जो झील शान्त थी, उसमें बड़ी-बड़ी लहरें उठने लगीं।



नाव में पानी भर रहा था

लहरें नाव पर टकरातीं और बार-बार पानी भीतर आता। चेले पूरी शक्ति से पानी बाहर निकालने का प्रयास कर रहे थे।



चेले डर गए

उनमें से बहुत से लोग झील को अच्छी तरह जानते थे, पर यह आँधी बहुत प्रबल थी। वे चप्पू चलाते और पाल सँभालते रहे, फिर भी आँधी पर काबू नहीं पा सके।



यीशु सोता रहा

हवा, लहरों और चीख-पुकार के बीच भी यीशु सोता रहा। उसे अपने पिता की देखभाल पर पूरा भरोसा था।



गुरु, हमारी सहायता कर!

चेलों ने यीशु को जगाकर कहा, ‘गुरु, क्या आपको चिन्ता नहीं कि हम संकट में हैं?’ उन्हें पूरा विश्वास था कि नाव डूबने वाली है।



यीशु खड़ा हुआ

यीशु आँधी के बीच उठ खड़ा हुआ। वह भयभीत नहीं था। उसने शान्ति और अधिकार के साथ हवा और समुद्र की ओर देखा।



शान्त हो! थम जा!

तब उसने हवा को डाँटा और समुद्र से कहा, ‘शान्त हो! थम जा!’ उसी क्षण हवा रुक गई और लहरें शान्त हो गईं।



बड़ी शान्ति

झील पूरी तरह शान्त हो गई। बादल छँटने लगे और नाव फिर धीरे-धीरे पानी पर तैरने लगी।



तुम क्यों डरे?

यीशु ने चेलों से पूछा, ‘तुम इतने क्यों डरते हो? क्या अभी भी मुझ पर भरोसा नहीं करते?’ वह चाहता था कि वे कठिनाई में भी विश्वास करना सीखें।



यीशु कौन है?

चेले आश्चर्य से एक-दूसरे को देखकर बोले, ‘यह कौन है कि हवा और समुद्र भी इसकी आज्ञा मानते हैं?’ उस रात उन्होंने सीखा कि यीशु पास हो तो वे कभी अकेले नहीं हैं।